बेफ़िकर बादशाह

* ब्रह्माकुमार डॉ. आर.पी. सोनी, हमीरपुर (हि.प्र.)

मैं ने सन् 1974 में प्रथम बार प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा आयोजित प्रदर्शनी देखी। निराकार परमात्मा शिव धरती पर युग बदलने के लिए आ चुके हैं, यह बात अच्छी लगी। शिव और शंकर के अलग-अलग चित्र भी देखे। समय के अभाव और स्थानीय सेवाकेन्द्र का सही पता न होने के कारण देखी गई प्रदर्शनी का ज्ञान मन में ही रह गया। सन् 1994 में मेरे गाँव में ब्रह्माकुमारी बहनें ज्ञान समझाने आईं। यह समाचार मिलते ही मैं समय निकालकर वहाँ पहुँचा। बहनों से ईश्वरीय ज्ञान समझकर सृष्टि-चक्र तथा परमात्मा के कार्य पर पूरा विश्वास हो गया। दिसम्बर, 1996 में मुझे शिवबाबा से सम्मुख मिलने का सौभाग्य मिला। डायमण्ड हॉल बन रहा था। शिवबाबा के बोले हुए शब्द आज भी मेरे कानों में गूंजते हैं कि मैं उन सब कारीगरों की मालिश करता हूँ, मुबारक देता हूँ जिन्होंने विशाल डायमण्ड हॉल बनाया।

सहायता नहीं मिल रही थी

मार्च, 1997 में सरकारी सेवा करने हेतु मेरा तहसील स्पीति-काजा (हि.प्र.) में जाना हुआ, जहाँ कि समुद्र तल से ऊँचाई 14 हजार फीट से भी अधिक है। चारों तरफ बर्फ से लदे ऊँचे पर्वत हैं। वृक्ष नहीं होते हैं। दो-तीन फीट ऊँची मौसमी झाड़ियाँ होती हैं। तापमान दिन में भी कई बार 1 डिग्री सैल्सियस से नीचे चला जाता है। वहाँ सारे दिन में एक ही सरकारी छोटी बस जाती थी। वह बस मलिंग स्थान पर रुक गई क्योंकि आगे सड़क टूट चुकी थी। दूसरी बस डेढ़ किलोमीटर दूरी पर मिलनी थी। मेरे पास एक बिस्तर, एक बैग व छोटा अटैचीकेस (लगभग 15 किलो सामान) था। मैंने एक यात्री से बिस्तर उठाने की सहायता मांगी। उसने एक सौ रुपये मांगे परन्तु वह अपना सामान उठाकर चला गया। फिर दूसरे आदमी से बात की, उसने बिस्तर ले जाने के 500 रुपये मांगे परन्तु उसके साथी ने इन्कार कर दिया कि हम आप के नौकर नहीं हैं।

मन ही मन बाबा से बात

तेज ठण्डी हवा चल रही थी। छोटे-छोटे पत्थर हवा से हिलकर आगे-पीछे गिर रहे थे। आबादी कहीं नज़र नहीं आ रही थी। संकल्प आया कि यहां से घर वापिस चला जाऊँ, सरकारी सेवा नहीं करनी है। परन्तु बस वहाँ से वापिस शिमला जा चुकी थी। शिव बाबा के सिवाय वहाँ मेरा कोई साथी नहीं था। 'मैं ज्योति बिन्दु स्वरूप आत्मा शान्तिधाम निवासी परमपिता परमात्मा शिव की संतान हूँ', मन में इसी एक पंक्ति का सिमरण चल रहा था। सामान उठाने पर सांस फूल रहा था। मैंने पहले अपना बिस्तर 100 गज तक रखा, फिर बैग व अटैची केस ले गया। इस प्रकार एक-एक नग आगे तक ले जा रहा था। मन-ही-मन बाबा से बातें भी कर रहा था कि शिव बाबा, जहाँ बड़ी आबादी होती है वहाँ तो आप अपने बच्चों की मदद करते हैं परन्तु इस बर्फीले पर्वतीय मरुस्थल में आप से मुझ पर एक भी शक्ति की किरण नहीं आ रही है।

शक्ति की तीन किरणें

चिन्तन कर ही रहा था, तभी वहाँ तीन आदमी पहुँच गए। उनके पास न कोई सामान था, न गर्म कपड़े थे। उनकी आयु 20 से 30 वर्ष के बीच थी। वे बिना दाढ़ी-मूँछ वाले थे, साधारण सफेद पायजामा-कमीज़ पहने थे। मैंने उनसे बस तक बिस्तर ले जाने के लिए प्रार्थना की। उन तीनों ने मेरे तीनों नग उठाए और चल पड़े। मैं

खाली हाथ उनके पीछे-पीछे चलता रहा। हम बस तक पहुँच गए। बस चालू हो चुकी थी परन्तु एक यात्री ने बस को रुकवाया। यह यात्री मेरे साथ पीछे से ही आया था। उन तीनों में से एक भाई ने बैग मुझे पकड़ाकर, मुझे बस में बैठने का इशारा किया। दूसरा भाई बिना बोले ही बस पर चढ़ गया और मेरा बिस्तर व अटैची केस ऊपर रख कर ड्राईवर को चलने का इशारा कर दिया। उन्होंने मुझ से कोई बात नहीं की। वे कौन थे, कहाँ से आए और कहाँ जा रहे थे, मुझे नहीं मालूम। मैं यही सोचता रहा कि ये तीनों बस में बैठेंगे तो मैं उनका धन्यवाद कर किराया दे दूँगा पर वे चुपके से चले गए। इस प्रकार शिव बाबा ने एक नहीं, शक्ति की तीन किरणें भेज कर मेरी सहायता की। मैं शिव बाबा का कल्प-कल्प के लिए ऋणी हूँ और कोटि-कोटि धन्यवाद करता हूँ।

पत्र से मिली सावधानी

जून महीने तक बर्फ सड़क से हटा दी गयी। तब मैं काजा की अंतिम पंचायत में अपने सेवा स्थान पर पहुँच गया। वहाँ की भाषा अलग थी। मुझे सीढ़ियाँ चढ़ने पर भी साँस फूल जाता था। वहाँ बच्चे से बूढ़े तक सभी शराब व मांस का प्रयोग करते थे। शाकाहारी शब्द जानते भी नहीं थे। मकान-मालिक ने समझाया कि यहाँ के ठण्डे मौसम में प्याज-लहसुन के बिना जीवित रहना असम्भव है। दूसरे ही दिन सेवाकेन्द्र की बहन का पत्र प्राप्त हुआ। साथ में कुछ मुरलियाँ मिलीं। पत्र में सावधान किया गया था कि प्याज मत खाना भले मौसम कितना भी ठण्डा हो। बादाम, काजू व खजूर खाते रहना।

बाबा ने कर रखे थे सब समाधान

कुछ दिनों तक वहाँ एक ऐसे अध्यापक का स्थानान्तरण हो गया जो ईश्वरीय ज्ञान में चलता था। वह मेरे ही साथ रहा और घर का सारा काम स्वयं करता था। मेरा रक्तचाप 200/120 के लगभग रहता था क्योंकि वहाँ आक्सीजन की बहुत कमी थी, थकावट का बहुत अनुभव होता था। परन्तु अध्यापक भाई के साथ रह कर वहाँ का समय बहुत अच्छा व्यतीत हो गया। मेरे सरकारी सेवास्थान पर डाक महीने में दो बार जाती थी। उस समय मोबाइल फोन की सुविधा नहीं थी। फोन करने के लिए 60 किलोमीटर का रास्ता तय करके जाना पड़ता था। घर में कोई प्रिय या अप्रिय घटना होती तो उसका आभास हो जाता था। मैं उस घटना की जानकारी घर वालों को देता तो वे हैरान हो जाते थे। शिव बाबा ने उस बर्फानी मरुस्थान में मुझ पर आने वाली मुसीबतों का पहले से ही समाधान कर रखा था। हम दुनिया के किसी भी कोने में अपना जीवन व्यतीत करें, परमात्मा की दृष्टि सदा हम पर रहती है। इसलिए शिव बाबा हमें चिन्ताओं से मुक्त कर बेफ़िकर बादशाह बना रहे हैं। ❖

मेरा तो घर मधुबन

ब्रह्माकुमार विनोद सिंह गुर्जर, महू (इन्दौर)

मेरा तो घर मधुबन है, मधुबन है, मधुबन है,
यहाँ पर काशी के शिव हैं, मक्का, काबा के रब हैं।
मेरा तो घर.....

स्वर्ग की आभा है, अरावली शीश झुकाता है।
सूरज आकर पुष्प चढ़ाता, चंदा दीप जलाता है।
कण-कण यहाँ का पावन है, माटी भी चंदन है।
मेरा तो घर.....

विघ्न विनाशक, इंद्रजीत देवों की नगरी है,
सरलचित्त, सहजधारी, ज्ञानामृत गगरी है,
प्रभु मिलन का संगम यहाँ पर रूहों का स्पंदन है।
मेरा तो घर.....

प्यार-दुलार और पालना बाबा देते हैं,
जन्म-जन्म की पतित आत्मा पावन कर देते हैं,
खुशियों से आँचल भरते, ऐसे दुखभंजन हैं।
मेरा तो घर.....